9. अधोलिखितयो संस्कृतेनानुवादो विधीयताम् - 20

(य) प्रगति के पथ पर आगे बढने की परिस्थितियां उपलब्ध हों इसके लिये दूसरों से याचना की आवश्यकता नहीं है। देवताओं से कुछ मांगना व्यर्थ है क्योंकि वे भी सत्पात्र की ही सहायता करने के अपने नियमों में बंधे हुये है। मर्यादाओं का उल्लंघन करना जिस प्रकार मनुष्य के लिये उचित नहीं है उसी तरह देवता भी अपनी मर्यादा में रहना चाहते हैं। दैवी अनुकम्पायें गरम दूध की तरह हैं जिन्हें लेने के लिये आवश्यक पात्रता का सम्पादन करना चाहिये।

(र) अपने स्वभाव तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन करना समयसाध्य और श्रमसाध्य है, परन्तु असम्भव किसी भी प्रकार नहीं है। मनुष्य विवेक के आधार पर अपने मन को समझा सकता है। विचारों को बदल सकता है तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन कर सकता है। सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक विचारों में अनेक बार परिवर्तन करने की आवश्यकता होती है। अपनी विचार शैली की त्रुटियों को समझना और उसमें सुधार करना बुद्धिमत्ता एवं साहस का कार्य है, जो असम्भव नहीं माना जा सकता।

AS-2152

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

संस्कृत

वर्ग 'ख'- साहित्य

पंचमप्रश्नपत्रम्

(निबन्धोऽनुवादश्च)

समयः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्काः - 100**

निर्देश : **पञ्च** प्रश्नाः समाधेयाः। **प्रथमः** प्रश्नोऽनिवार्यःऽस्ति। प्रतिवर्गादेकः प्रश्न समाधेयः।

1. अधोलिखितविषयेषु टिप्पण्यो दीयन्ताम - 4×5=20

(क) ध्वनेः स्वरूपम् ।

(ख) काव्य प्रयोजनम् ।

(ग) रीतिरात्मा काव्यस्य।

(घ) अलंङ्कारस्य स्वरूपम् ।

(ङ) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् ।

प्रथमो वर्गः

2. ''काव्यस्योद्भवे हेतवः'' इत्यधिकृत्य संस्कृतेन निबन्धो लेख्यः। 20

3. लक्षणायाः षड्विधत्वं सोदाहरणं संस्कृतेन स्पष्टीक्रियताम् । 20

द्वितीयो वर्ग :

4. रससूत्रमाश्रित्य संस्कृतेन निबन्धो निबन्धनीयः। 20

5. रूपकस्य भेदाः संस्कृतेन वर्णनीयाः। 20

तृतीयो वर्ग :

6. अनूद्यताम् - 20

(क) अकारणाविष्कृतवैरदारूणादसज्जनात्कस्यभयं न जायते।
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं संनिहितं सदा मुखे।।

(ख) सुभाषितं हारि विशत्यधोगलान्न दुर्जनस्यार्करियोरिवामृतम् ।।
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नामिवातिनिर्मलम् ।।

7. निम्नलिखितयोः अनुवादो विधेयः - 20

(च) सत्यपि नैकविधप्रवादेसु यद्व्याकरणं शब्दसाधुत्वोपकारकम् , तदुपकारकताऽनादिलोक व्यवहारेणैवावगता किमनेन विहितं स्यात्। शब्दाद्वैतवादे वेदान्तादिवत् मोक्षसाधनस्वरूपं विचारमपि नैव दृश्यते। अत एव धर्मादिचतुर्विधपुरूषार्थेषु कस्यापि साधकता नास्ति। अपिचाध्यात्मिकविचाराहते-ऽन्येषां चिन्तनानां शारत्रत्वमेव न स्यादिति व्याकरणस्या-गमत्वमप्यनुपन्नमेव, अतस्तत्र शदानुसारिदर्शनबीजानां गवेषणं उत स्थापनं खपुष्पायितमेव परञ्च व्याकरणागमस्य प्रकियापक्षजिज्ञासुजनाय न मिलिष्यति किमपि दर्शनबीजम्।

(छ) प्रत्यभिज्ञादर्शने विवर्तपरिणामप्रतिबिम्बं नाङ्गीक्रियन्ते। यतो हि विवर्त अतात्विको निर्भासात्मा भवति, तथाऽत्र नास्ति। यतो हि निर्भसते तदसत्यं च तदिति कथं भवितुमर्हति।

परिणामोऽपिनात्र,यतो हि परिणामे रूपान्तरं च प्रादुर्भवति। तथात्र नास्ति। प्रकाशस्य प्राप्याऽप्रकाशो भवेत् । प्रतिबिम्बवादोऽपि न।

चतुर्थो वर्गः

8. अधोलिखितयो संस्कृतेनानुवादो विधीयताम् - 20

(प) दूसरों को हम अनेक शिक्षायें देना चाहते हैं, उनके मार्गदर्शक बनना चाहते हैं, अन्य व्यक्तियों को अपना आज्ञानुवर्ती बनाना चाहते हैं परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि हम अपने मन और इन्द्रियों को अनुशासन में नहीं कर पाते। निम्न स्तर का जीवन जीने के लिये आज हमें इसलिये विवश होना पड़ता है क्योंकि हमारा आन्तरिक स्तर अनेक दोष दुर्गुणों से ग्रसित है। इसलिये हमे उदात्त विचारों से युक्त होना चाहिये।

(फ) स्वार्थपरता ने अनीति एवं अपराधों की वृद्धि की है। अनैतिक कार्यों के प्रति तीव्रघृणा मनुष्यों में नहीं है। उसके स्थान पर दुष्प्रवृत्तियों को अपनाने और उनसे समझौता करने में लाभ समझना सर्वत्र विद्यमान है। इन विपरीत परिस्थितियों से हमे लड़ना चाहिये। राष्ट्र के पुनरूत्थान के लिये यह आवश्यक है। हमें अपने अतीत जैसे महान गौरव को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। यह कार्य बाह्य उपकरणों से ही नहीं बल्कि चरित्र के परिष्कार से सम्भव होगा। उत्थान का यही श्रेष्ठ आधार हो सकता है।